मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की विशेषताएँ (Qualities of Mentally Upset Children)

ये विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

1. शहर तथा गाँवों में पाये जाने वाले मानसिक रूप से पिछड़े बालक की विशेषताओं में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है।
2. ऐसे बालकों का पता उनके व्यवहार से चलता है।
3. इनकी शैक्षिक निष्पत्ति सामान्य बालक से कम होती है।
4. ऐसे बालकों के पिछड़ेपन के कारण दो प्रकार से हैं—
   (अ) वंशानुक्रम, (ब) वातावरण।

वंशानुक्रम ही बालक के पिछड़ेपन को निश्चित करता है। परन्तु वातावरण का प्रभाव भी काफी पड़ता है। जब वातावरण निषेधात्मक व दबावपूर्ण होता है तो सभी लोग इससे नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। ऐसे वातावरण में मानसिक रूप से पिछड़े बालक अधिक निष्क्रिय हो जाते हैं। एक ऐसा वातावरण जो सहानुभूतिपूर्ण एवं प्रेरणादायक है, न केवल साधारण बालकों को प्रोत्साहित करेगा बल्कि एक मानसिक अक्षम बालक को भी आवश्यक व्यवहार सम्बन्धी समायोजन में सहायक होगा। बुरे वातावरण में एक सामान्य मनुष्य अपने को भली प्रकार समायोजित कर सकता है परन्तु मानसिक रूप से अक्षम बालक अक्सर कुसमायोजित हो जाते हैं।

5. ऐसे बालकों के पास लोचता (Flexibility) तथा संचित शक्ति नहीं होती जो कि उन्हें भारी बोझ, आकस्मिक परिवर्तन तथा अधिक काम को करने के लिए चाहिए।
6. मानसिक रूप से पिछड़े बालक अपनी बुद्धि-लब्धि के अनुसार भिन्न-भिन्न बौद्धिक कार्यों में पिछड़े होते हैं।
7. ऐसे बालकों को निर्देश देना एक समस्या है।
8. सामान्य बालक अपने आप शारीरिक विकास के साथ समायोजन कर लेता है। वह उसे विकास का एक प्राकृतिक नियम समझेगा जबकि मानसिक रूप से पिछड़े बालक को ऐसे समायोजन में कठिनाई होगी।

Scanned with CamScanner

9. संवेगात्मक क्षेत्र में यह सामान्यत: सोचा जाता है कि वे भावनाएँ एक मानसिक रूप से अक्षम बालक की भी हैं जो कि सामान्य बालक की होती हैं। परन्तु संवेगात्मक प्रतिक्रिया बौद्धिक शक्ति पर निर्भर है। अत: संवेगात्मक समायोजन में भी बालक पिछड़े होते हैं।
10. सामाजिक समायोजन भी ऐसे बालकों का कम होता है।

Scanned with CamScanner